Appendix. 5

परिशिष्ट - ५

'गोपाल' कृत भगवंत विरुदावली

(पृष्ठ ३९४-४०५)

भगवंत विरुदावली

सुमिरि गणेश महेश के चरन कमल चितलाइ
नृप खीची भगवंत को, वरनों सुजस बनाइ
धन हरिकेस नरेस भो मध्य देश अवतार
जिनके सुत भगवंत जिन हर्यो भुजन भुव भार
राज बड़ो कवि मंद मति क्यों गुन वरनो जात
सुजस सुधा मंजुल महा अंजुल में न समात
विनय करत गोपाल कवि कवि कुल यह सुनलेहु
चूक सहित दूषन परै सो भूषन करि देहु
महावीर भगवंत जहं जुरत जुद्ध रनधीर
जै खीची कुल चंद की जै जै जै रघुवीर
जै जै जै रघुवीर जानकी उर अनुरंजन
जै अनाथ के नाथ दीन दारिद दुख भंजन
जै करुना मय रामनाम संतन सुखदायक
जै दानव दल मलन भक्त वंश सदा सहायक
जै अधम उधारन सुमिरि मन गुन दसरथ के नंद को
जै उदित वंस वरनन करौं नृप खीची कुल चंद को
कुल कंद खीची वंस प्रबल प्रताप वीर बखानिए

जिन जेर कीन्हे सकल जग समसेर जाहिर जानिए

जिन सुमति सुद्ध विचारि गैयन दुजन के प्रतिपाल की

वर वरनिए विरुदावली भगवंत राय भुवाल की

भगवंतराय भुवाल कठिन कराल गहि कर बाल है

जिन फरन बीच फतूहले दै अरिन के उर साल है

जस जगत जाहिर जानिए सनमान दानकृपान मैं

जिन मैटि सकल अनीति कीन्ही राजनीति जहान मैं

जिन सैर अफगन खान कौ दल हन्यौ वरछिन सौं भलौ

निज वखत खीची वंस कौ लखि तखत दिल्ली कौ हलौ

जिन कटक जाँ निसार खां कौ लूटि लीन्हों पलक मैं

चहुं ओर मैं समसेर की ह्वै रही खूबी खलक मैं

जिन बम्ब दै सन्मुख समर मैं हटकि दियौ उजीर कौ

जिन मारि जमुना तीर कीन्हौ ख्वार ख्वाजा मीर कौ

इत गोल बांधि अडौल अचल हरौल दिल्ली कौ हन्यौ

समसेर आगे शाह कौ नरनाह मन मैं ना गुन्यौ

गन्यौ न मन मैं शाह कौ साहेबसमर समत्थ

नृप खीची भगवंत कौ महावीर विरुदैत

लक्खन वख्तर पोस रन चढ़त संग पखरैत

पखरैत बख्तर पास पैदर संग सुभट विराज हीं
अति दुरद दारुन दीह दलमद गलित वलित विराज हीं
दल चढ़त प्रबल प्रताप फैलत सुजस पारावार लौं
भरि रही पूरन उरन मैं दुसमननि के दहसति प्रलौं
बह बहे वीर विराज ही छितिपाल छात्री साज ही
गह गहे धौंसनि की धमक घनघोर धुनि सुनिलाज हीं
घन घटा सीच तुरंगिनी सजि सूर सैन भयावनै
फहरात बान निसान आगै रंगदार सुहावनै
चढ़ि चलत जालिम जंग कौं निज जीत जम्बू दीप की
गढ़ तजत गाढ़े गढ़पती सुनि ढाक मर्द महीप की
छिन एक सैना सत्रु की संमुख न रन ठहराति है
रन जुद्ध समय फतूह जाके भुनजि पैफहराति है
जिन सत्त जुग की रीति कीन्ही सकल जम्बू दीप मैं
गुन करन अर्जुन भीम के भगवंतराय महीप मैं
भगवंतराय महीप जिन रण मॉड मार्यो साह सौं
यह है सहादत कौन कौ सन्मुख रहै नरनाह सौं
सुन्मुख कैसे रहि सकै समर सहादत खान
जस जाहिर भगवंत को सुनियत दान कृपान
जहाँ वीर भगवंत के बजी बम्ब रन आय

तुरुकन आड़े ह्वै सकत गाड़े रहत न पाय
चल्यौ भूप दिग्विजय कौ विजया दशमी पाय
जंग जुटन कौ जवन कुल प्रगट भयौ तहं आय
इत खीची भगवंत नृप कोपि चढ्यौ चौहान
उत सन्मुख साहस कियौ समर सहादत खान
खानदाना बड़े कहाये जे सहादत संग लाए
सुनै जे बावन हजारी धरे सिर पर सरमभारी
यमन जुमके जोमवारे जैन रनतें रहत टारे
मरद मनसबदार गाढे महावीर अमीर ठाढे
समर चढ़ संके सिलाही खैर करिए या इलाही
चहुंधा चौंचद मचायौ बम्ब देत नवाब आयौ
चढ़त दूत भगवंत गाजी जिनहुं सन्मुख फौज साजी
वैस वीर बघेल सुर की चढ़त जंग न बाग मुर की
सोमवंसी समर सौन कफन सिरपर बांधि बाने
पैज करत पंवार आए दिखित गौर रठूर धाए
चाव चित चौहान चौपै प्रबल बल परिहार कोपै
करखि खीची भयौ आगे कुरी औ सब और लागे
छत्रधरि छितिपाल आए विरद वंदी जनन गाए
देखिल (दल) दिल में उमाहैं सुनत ज्यौं ज्यौं युद्ध चाहैं

हृदय मैं आनंद छायौ त्यौं सहादत खान आयौ
कमर मैं समसैर बांधे युद्ध सन्मुख कौन कांधे
जमन कुलकी नास करि हौं खग्ग गहि खप्परहिभरि हौं
मारि रन फौजें चलाऊं जरैं दिल्ली की हलाऊं
नाम तब भगवंत मेरा रहन देउं न आजु डेरा
बचन की नहिं टेक टारौं चढ़ि सहादत खान मारौं
मारौं आज नवाब कौ कै कर माथै देउं
कै जीतौं सुरलोक कौ जीत जगत जस लेउं
पुरुषारथ किन्हौ जवन दात्री दिति छितिपाल
रसना होय हजार जब तब वरनै गोपाल
नीची नजरि न करत रन खीची सब सामंत
सन्मुख साहन सौं लरै सौ प्रकट्यौ भगवंत
इत भगवंत महीप रन उतै सहादत खान
दूहूं ओर दूनौ अचल होन चहत घमसान
दुहूं ओर निसान वज्जैं दुहूं ओर सनाह सज्जैं
दुहूं ओर गयंद भारी मनहुं घुमड़ी घटाकारी
दुहूं ओर हथ्यार झमकैं चपल चपला मनहुं चमकैं
दुहूं दिशि ढाढी अलापैं सुनत कायर कूर कांपैं

दुहूं दिसि पख रैंत आए उमड़ि बख्तर पोस धाए
खड़े दुहुं दिशि बीधिखाना छूट्यो सन्मुख तोपखाना
चलैं तीर तुफंग गोली, तड़पि तोपें तुरत बोली
सेर बच्चा छुटैं जंगी औ जमुर का राम चंगी
जहां रावो धक धकानोप्रलयसे रन होत मानो
धुवां धुंधुर धुरनकारी मनहुं भादों की अंध्यारी
आनि गोला गरत खाये, गिरि समान गयन्द धाए
बम्ब दै नरनाह ताक्यो जाइ सन्मुख समर ताक्यो
मरन हारे भए आगे सुभट सन्मुख भिरन लागे
तुरक लोहे आनि लपेट इततेंहुं रजपूत झपटे
पैलिरन रजपूत पैठे शाह सेजे रहत ऐंठे
वकन पर पर जिमि वाज टूटैं मृगन पर मृगराज छूटैं
भिरत तिमि भगवंत खीची करत नजर न नैक नीची
धन्य धन्य नवाब भाखै सरन मोहि अब कौन राखै
को राखै मोहि सरन अब महावीर बलवंत
सन्मुख से हमसो लरै सो प्रगट्यो भगवंत
मारु मारु मुख सौं कढै अस्त्रन कीन्हेउदाव
दुहूं ओर झुमकैं सुभट दैहं रकावन पांव
दै रकाबन पांव झुमकैं वीर सौं एक वीर जुमकैं

वीरवर बरछी चलावैं हिए तेगहि गहि हलावैं
समर तहं समसेर झारैं ताकि रन सरदार मारैं
करखि देत कटार पंजर हनत गहि गहि हिए खंजर
सुभट ढुकि ढालत ढकेलत भुजन केवल पील पेलैं
भिरत एकै वीर कुश्ती करें जे भगवंत पुश्ती
हनत हैं हाथी हथ्यारन करी इमि सिफ्रै सिलारन
हंकि सन्मुख सैन हटकैं शुण्डगहि गहि मुंड पटकैं
द्रोन रन भषिमहि जानो करन अर्जुन भीम मानों
भिरत रन घायल हजारन करी इमि सिफो सिलारन
जहां जौन जमात भारी लोथ ऊपर लोथ डारी
परे लोहू के लपेटे विहंग ज्यों बाजन झपेटे
लपट लोहे की उड़ानी नैक ना भगवंत मानी
मारि रन अब्दुल तुराबैं तमकि तब ताक्यो नवाबैं
कियो रन भगवंत जोरा मुख सहादत खान मोरा
सरम दिल्ली की न कीन्ही समर सन्मुख पीठ दीन्ही
युद्ध सन्मुख जुटत मोरै फिरे परनहिं हाथ डारै
फतह करि नौबत बजाई कटक मैं फेरी दुहाई.
घरी पल छिन एक बीत्यो आवजात नवाब चेत्यो
बहुरि उलट्यो ठानि रन मैं मरन जानि नवाब मन मैं

मरन हारे फिरे साथी ह्य खुदावत चढ़े हाथी
कराचोली कर चपैटे लपटिगे लोहू लपैटे
मारि रन घमसान कीन्ह्यो एक एकन को न चीन्ह्यो
कीच लोहू की मचाई जीत आतब क्यों बचाई
जियत खेत न नैक छांड़ों शाह सौं रन मुंह न मोड़ों
मोड़ों मैं रन साहसौं छोड़ौं नैक न खेत
गहै खग्ग खीची प्रबल सन्मुख समर सचेत
जीमसहित जुमकैं जहां जालिम जौन अनंत
अनीलिखे विचलैं तहां आड़यो रन भगवंत
उमड़ि रन भगवंत आयो मनहुं अंगद पांव गाड़्यो
पैड़ करि आडिल अरव्वी हनत रन गहि गहि गरव्वी
मारि मुहमद खान नायो खान अहमद खेत आयो
शाह के बावन हजारी मारि डारे ज्यों बजारी
युद्ध सन्मुख जोड़ आयो तेह मानो काल खायो
करि सहादत खान रैला खग्ग गहि रन आनि पैला
और पै लोहान डारे जंग जुटत नवाब मारैं
करातेगा कर मिलाये हाथ हौदों पर चलाए
मारि हौदे किए खाली हँसी ठट्ठा मारि काली
सुण्ड काटि भुषुण्ड लागे विडरि एकै दुनद भागे

घूमि एकै गिरे घायल हुते जे रन बढ़े पायल
पाप पुट्ठा खींच नाहीं युद्ध में रन परे ताहीं
हत्थ मत्थ अरु पाउ विनके परे जहं तहं युद्ध ठिनके
परे भट अधकटे फर में तऊ गहत कृपान कर में
ओठ चावि चवाय चौहैं मुच्छ मोरि मरोरि मौहैं
उठत सुभट संभारि संगर भिरत उद्भट लोह लंगार
सकल अरि मत्थन विदारैं मरद मुगल पठान मारैं
विकट कटक कराल काटीं रुण्ड लोहू मा सपाटीं
गिद्ध गोमय गूद गलकैं लील जात लगाय पलकै
खुसी होत खवीस धाए ताल दै वैताल आए
लख्यो लोहू को दलेला पियत रन गिरजा गलेला
मुंड लागि महेस डगरे भूत भैरव तहां वगरै
जंग जुरि जोगिनी आईं डकरि तहां डंकिनी धाईं
मास माते मास हारी ईस तंह नाचे कहारी
जुद्ध जुरि अमनैक ठाढे मरद मनसबदार गाढे
गाढ़े मरद महीप जहं रन में आए पाइ
सकल सुभट सन्मुख समर कौन उवारन आइ
खेत जीत खीची प्रबल हार्‍यो खेत अमीर
जंगजमन जालिम जहां जुरत जंग रनधीर

जहं सेख सैयद अरु किते वर वीर वरछिन सोहनै
तहं रुण्ड मुण्ड भुषुण्ड भभकत गिरत रन घायल घनै
ह्वै गए सकल सुमार मुगल पठान जेहि रन खेत मैं
समसेर गहि सन्मुख समर भगवंत राय सचेत मैं
जो मरन को मजबूत वै रजपूत फौजनि ठहरि हैं
साथी न चाहत साथ को हाथी हथ्यारन गहि रहैं
रन रहे दूनौ दीन रुपि समसेर को नहिं देभु है
भगवंत रैया राय नृप गाड्यो जहां रन खंभु है
गाड्यो जहां रन खंभु करि जंगदेव को मन ध्यान है
रन युद्ध सन्मुख जूझिवे को परम पूरन ज्ञान है
करि जुद्ध धरम प्रसिद्ध जियधरि सरम छिति छितिपाल की
हिम्मत सराहत साहसौं किम्मत अरारु लाल की
को सेर आगे समर मैं करवाल कर मैं गहि सकै
को लाल साहि समत्थ के सन्मुख समर मैं रहि सकै
उमड़ी अनी जहं जुद्ध जालिम जौन कुलके जोम की
रन चली आगे सवनि कै समसेर मारा मार की
तेहि ठौर गौर रठूर हाड़ा लेखराजहिं लेखियै
आगे लरत भगवंत के तहं वैस किरपा देखिए
इमि गहि भवानी सिंह कर कर वाल रन वलवंत है

जिमि जुद्ध रावन राम के आगे लर्यो हनुमंत है
भूपत भवानी सिंह समर समत्थ टारे नहीं टरै
अमनै करन दल हू तहां कमनैत कमनैती करै
ज्यौं सिंह साहस कै हनै गजराज अरुभत जंग मैं
रन जुद्ध सन्मुख घट सुभट अंगवै न कोऊ अंग मैं
बर्छी चलत्तरवारि जहँतहँ ओट देत न ढाल की
नृप सभासिंह कुमार रन रच्छा करत महिपाल की
करधारि धनु सर महाभारत जुद्ध पारथ ज्यौं करै
रन द्रोण भीषम कर्ण सम भगवंत के आगे लरै
राती भई रन भूमितहं हरिकेस को नाती लरै
भूपति भवानीसिंह तंह कर खग्ग गहि खप्पर भरै
जिन अस्त्र आंच संभारि जीत्यो शत्रु की रन सींव है
लखि चकित चायो वैरिवर रन करन मानो भीम है
करन भीम सम भिरत अमित उद्भट उदण्ड जहं
नच्चत जुग्गिन जूह मचत अति रुधिर कीच तंह
कहुं हत्थ मत्थ कहुं चरन कटत फरकत कवंध गन
गिरत भुण्ड अरि मुंड भूरि भभकत भुषुण्ड गन
कर गहि कृपान कूद्यो कटक सभासिंह नरनाह सुव
सब सत्रु सैन मद मलन को भूप भवानी सिंह तुव

भूप भवानी सिंह तू अमर भयो तिहुंलोक
जिन सन्मुख समसेर की भली निवाही नोक
रायभूप भगवन्त जहं खीची मनि रनधीर
शुद्धज्ञान सन्मुख समर युद्ध दान दै वीर
युद्धदान दै वीर जगत जस अटल पाइ कै
गयौ सूर सुरलोक भानु मंडल मभाइ कै
मान सहित मघवान जानि दीन्यो तेहि आसन
सज्जन सकल समेत छिनकु वैठ्यो सिंहासन
यहिं भांति जिय जानि कै कृपा कालिकाकंत की
सुज्योति समानी ज्योति मैं राय भूप भगवंत की ।

प्रतिलिपि काल-सं०-१६११